ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

वाल्मीकि रामायण के पदों में निहित पर्यावरण शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शकुंतला जोशी, शोधार्थी, जैन विश्व भारती (डीम्ड यूनिवर्सिटी, लाडनूं)
प्रो. बनवारी लाल जैन, शिक्षा शास्त्र विभाग, जैन विश्व भारती (डीम्ड यूनिवर्सिटी, लाडनूं)

शोध सारांश

वाल्मीकि रामायण के सात कांडों में वर्णित प्राकृतिक परिवेश, वन्य जीवों, और पारिस्थितिकी तंत्र का विश्लेषण पर्यावरणीय शिक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं को उजागर करता है। इन पदों में प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग, जैव विविधता के संरक्षण, और पर्यावरणीय स्वच्छता जैसे पहलुओं को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, जीवों के प्रति संवेदनशीलता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व, और पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन का भी संदेश मिलता है। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति आदर के सिद्धांत निहित हैं।

बीज शब्दः वाल्मीकि रामायण, कांड, पर्यावरणीय शिक्षा, प्रकृति।

प्रस्तावना

प्रकृति का संरक्षण और उसके प्रति जागरूकता मानव जीवन के सतत विकास के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाने वाले जैविक और अजैविक घटकों का समुच्चय है। यह घटक पारस्परिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर करते हैं और सामंजस्यपूर्ण पारिस्थितिकीय तंत्र का निर्माण करते हैं। आज के समय में बढ़ते औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो गया है, जो न केवल मनुष्य बल्कि समस्त जीव–जगत के लिए संकट उत्पन्न कर रहा है।

पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और इसके संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी विकसित की जा सकती है। यह शिक्षा न केवल प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरणीय स्वच्छता पर बल देती है, बल्कि जीव–जंतुओं, पौधों, और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के महत्व को भी रेखांकित करती है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण के मूलभूत सिद्धांतों का उल्लेख मिलता है। वाल्मीकि रामायण जैसे महाकाव्य में पर्यावरणीय शिक्षा के विभिन्न आयाम दृष्टिगोचर होते हैं। दंडकारण्य के प्राकृतिक सौंदर्य, वन्यजीवों के साथ सह–अस्तित्व, और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग जैसे प्रसंग पर्यावरणीय चेतना को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करते हैं।

शोध की आवश्यकता

21वीं सदी में स्पष्टतः दिखाई देता है कि औद्योगिकरण, शहरीकरण और भौतिकवादी जीवन शैली ने पर्यावरण को गंभीर संकट में डाल दिया है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता में कमी, वायु एवं जल प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण आदि समस्याएं आज वैश्विक विमर्श के केंद्र में है। इस संदर्भ में पर्यावरण शिक्षा ही जागरूकता का माध्यम है। वर्तमान समय में जब संपूर्ण विश्व पर्यावरण संकटों से जूझ रहा है, ऐसे में पर्यावरण शिक्षा केवल शैक्षिक अनिवार्यता नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकता बन जाती है। आज का विद्यार्थी यदि केवल वैज्ञानिक तथ्यों से ही पर्यावरणीय समस्याओं को समझेगा तो उसके व्यवहार में स्थाई परिवर्तन लाना कठिन होगा इसीलिए आवश्यक है कि वह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से प्रकृति से जुड़ाव अनुभव करें। इसी संदर्भ में भारतीय परंपरा और साहित्य का योगदान अत्यंत मूल्यवान है।

शोध के उद्देश्य

1.रामायण में निहित पर्यावरण शिक्षा के पदों का विश्लेषण करना।

शोध की विधि

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है।

पाठ्य सामग्री का चयन वाल्मीकि रामायण के पदों से किया गया। पाठ्य सामग्री का विषयगत विश्लेषण करते हुए पर्यावरणीय शिक्षा के तत्वों की पहचान की गई।

प्रदत्त संकलन

इस शोध के लिए प्राथमिक डेटा वाल्मीकि रामायण से ही लिया गया है। शोधकर्ता ने रामायण के सभी कांडों (खंडों) को एकत्रित कर उनकी विषयवस्तु, मूल भावनाओं और अंतर्निहित शैक्षिक मूल्यों का गहराई से अध्ययन किया। द्वितीय स्रोत के रूप में रामायण पर किए गए अन्य शोध, शोध पत्र, संबंधित पुस्तको आदि का अध्ययन किया गया।

वाल्मीकि रामायण के पदों में निहित पर्यावरण शिक्षा का विश्लेषण

वाल्मीकि रामायण के पदों में पर्यावरण शिक्षा की गहरी समझ और सीख निहित है। इन पदों में निहित पर्यावरण शिक्षा का विश्लेषण निम्नानुसार है–

1.आध्यात्म और पर्यावरण संरक्षण

ताश्रमपदं पुयं ऋषीं भावितात्मनाम् ।
बहुवर्षसहस्रा तप्यतां परमं तपः ।। १–२३–६
स्नाताश्च कृतजप्याश्च हुतहव्या नरोत्तम ।
यथार्हमजपन् संध्यामृषयस्ते समाहिताः ।

सर्ग 23 के इस श्लोक में महर्षियों के आश्रमों का गंगा–सरयू संगम के निकट होना, उनके द्वारा तपस्या संध्या वंदन और जप करने का उल्लेख यह दर्शाता है कि उस समय पर्यावरणीय स्थलों का धार्मिक महत्व था। ये स्थान पवित्रता और शांति का प्रतीक माने गये। यहां सम्पन्न की जाने वाली साधना वातावरण को शुद्ध और सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण करने का प्रयास करती थी, जो यह दर्शाता है कि उस समय पर्यावरण का सम्मान करना, उसकी पवित्रता को बनाए रखना और उसके संरक्षण के प्रति सतर्क रहना भी एक प्रकार की धार्मिक साधना थी।

2. नदी और वृक्ष के प्रति आस्था और सम्मान का भाव

कालिन्दीमध्यमायाता सीता त्वेनामवन्दत ।।
स्वस्ति देवि तरामि त्वाम् पार्येन्मे पतिर्वतम् ।२–५५–१६
न्ध्रोधम् तमुपाग्म्य वैदेहि वाक्यमब्रवीत् ।।
नमस्तेऽन्तु महावृ{ा पारयेन्मे पतिर्वतम् ।२–५५–२४

चित्रकूट जाने के लिए यमुना नदी पार करते समय सीता जी ने यमुना के मध्य में पहुंचकर उन्हें प्रणाम किया और कहा कि "आप हम पर कृपा करें कि हम सब सकुशल पार निकल जाए।" नदी पार उतरने के पश्चात उन्होंने शीतल छाया देने वाले श्यामवट के समक्ष मस्तक झुकाया और कहा कि "आप हम पर ऐसी कृपा करें जिससे मेरे पति अपने वनवास व्रत को पूर्ण कर सकें"। सीता जी द्वारा यमुना नदी और श्यामवट वृक्ष के प्रति सम्मान प्रकट करना यह दर्शाता है कि प्राचीन काल में प्रकृति के प्रत्येक तत्व का सम्मान किया जाता था। इस प्रार्थना से यह सीख मिलती है कि हमें जल स्रोतों और वृक्षों का न केवल संरक्षण करना चाहिए बल्कि उनके प्रति आभार और सम्मान का भाव भी रखना चाहिए। यह पर्यावरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो प्राकृतिक संसाधनों और वृक्षों के प्रति आस्था और सम्मान की भावना को प्रेरित करता है।

3 वन्य जीवन का सौंदर्य और आनंद प्राप्ति–

पश्य भल्लातकान् फुल्लान् नरैः अनुपसेवितान् ।
फल पअवनतान् नूनम् श{यामि जीवितुम् ।। २–५६–७
,ष क्रोशति नत्यूहः तम् शिखी प्रतिकूजति ।
रम.ीये वन उद्देशे पुष्प संस्तर सम्कटे ।। २–५६–६

श्री राम द्वारा चित्रकूट में वृक्षों, मधुमक्खियां के छत्तो, पक्षियों के कलरव और रंग–बिरंगे फूलों से सजे जंगल का वर्णन उपरोक्त श्लोक में प्रस्तुत किया गया है। जो प्रदर्शित करता है कि वन्य जीवन न केवल रमणीय है बल्कि मानव मन को शांति और आनंद प्रदान करने का भी स्रोत है। वनों का सौंदर्य और उसके संसाधनों का वर्णन यह सिखाता है कि हमें वन्य जीवन के प्रति आभार और प्रशंसा का भाव रखना चाहिए।

4. पर्यावरण और समाज का सामंजस्य

निष्कूजम् इव भूत्वा इदम् वनम् प्रदर्शनम्।
अयोध्या इव जन आकी.ा सम्प्रति प्रतिभाति मा।। २–६३–१४

भरत की सेना के चित्रकूट पहुंचने से वन का शांत वातावरण अचानक जीवंत हो उठता है जिससे उन्हें चित्रकूट में अयोध्या का सा आभास होने लगता है। इस घटना से यह संदेश मिलता है कि पर्यावरण और समाज का सामंजस्य महत्वपूर्ण है। इसमें यह भी प्रदर्शित किया गया है कि मनुष्य का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति को ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे प्राकृतिक स्थलों का संतुलन बना रहे और पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे।

5. प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव और पर्यावरणीय सुख

न राज्याद् भ्रंशनम् भद्रे न सुहृद्भि र्विना भवः ।
मनो मे बाधते दृष्ट्वा रम.ीयम् इमम् ि.रिम् ।। २–६४–३

श्री राम चित्रकूट पर्वत का वर्णन करते हुए कहते हैं कि चित्रकूट की सुंदरता उनके दुखों को कम करती है और राज्य त्याग का शोक भी दूर कर देती है। जिससे शिक्षा मिलती है कि प्रकृति में रहने और उसका अनुभव करने से मानसिक शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। व्यक्ति का प्रकृति से जुड़ाव तनाव और मानसिक संतुलन को बनाए रखने में सहायक होता है।

6. वन्यजीवों और पक्षियों की विविधता

नना मृग गण द्वीपि तरक्षु ऋक्ष गणै र्वृतः ।
अदुष्टै र्भात्य् अयम् शैलो बहु पक्षि समाकुलः ।। २–६४–७

श्री राम चित्रकूट के विभिन्न जीव जंतुओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि यह पर्वत बहुसंख्यक पक्षियों के साथ विभिन्न प्रकार के हिरण, व्यग्र, चीते और रीच से भरा है। लेकिन हिंसक जानवर भी यहां शांतिपूर्ण ढंग से रह रहे हैं। यह प्रकृति में विविधता और उनके सहअस्तित्व पूर्ण जीवन को दर्शाता है। जैव विविधता का यह संतुलन प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देता है।

7. वृक्षों और पौधों का महत्व

आम्र जम्बु असनैलोध्रैः प्रियालैः पनसैधवैः ।
अन्कोलैभव्य तिनिशैब्लिव तिन्दुक वेभिः ।। २–६४–८
काश्मर्य् अरिष्ट वरौमधूकैः तिलकैः तथा ।
बदर्य् आमलकै नीपै वधन्वन बीजकैः ।। २–६४–६
पुष्पवद्भिः फल उपेतैः चायावद्भि मनो रमैः ।
वम् आदिभिआकीश्रियम् पुष्यत्य् अयम् गिरिः ।। २–६४–१०

विभिन्न प्रकार के वृक्ष और उनकी महत्ता का वर्णन करते हुए श्री राम ने आम, जामुन, कटहल, नीम, महुआ, बेर आदि वृक्षों का वर्णन किया है। जो इस पर्वत की शोभा में वृद्धि कर रहे थे। यह वृक्ष केवल सौंदर्य नहीं बढ़ते बल्कि पर्यावरण में संतुलन भी बनाए रखते हैं और विभिन्न प्रकार के जीव जंतुओं के लिए आश्रय भी प्रदान करते हैं। वृक्षों का संरक्षण और उनका महत्व हमेशा से अति आवश्यक रहा है।

8.पर्यावरण के प्रति आस्था और नैतिकता

इमम् तु कालम् वनिते विजह्विवामःत्वया च सीते सह ल{म.ेन ।
रतिम् प्रपत्स्ये कुल धर्मवर्धिनीम् सताम् पथि स्वै र्नियमैः परैः स्थितः ।। २–६४–२७

श्री राम सीता से कहते हैं कि मैं तुम दोनों के साथ यहां 14 वर्षों का समय आनंद से व्यतीत कर सकता हूं यहां मुझे अत्यंत सुख की प्राप्ति होगी यह दर्शाता है कि वे वन में निवास को अमृत के समान मानते हैं। यह प्रकृति के प्रति गहरी आस्था और उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने की भावना को प्रकट करता है। यह संदेश देता है कि पर्यावरण के साथ सामंजस्य पूर्ण जीवन व्यतीत करना एक नैतिक कर्तव्य है जिससे हमारे व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास में भी सहायता मिलती है।

9. प्राकृतिक परिवेश का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व

दर्शनम् चित्रकूटस्य मन्दाकिन्याः च शोभने ।
अधिकम् पुर वासाच् च मन्ये च तव दर्शनात् ।। २–६५–१२
त्वम् पौर जनवद् व्यालान् अयोध्याम् इव पर्वतम् ।
मन्यस्व वनिते नित्यम् सरयूवद् इमाम् नदीम् ।। २–६५–१५

श्री राम का मंदाकिनी और चित्रकूट की तुलना अयोध्या और सरयू से करते हुए कहते हैं कि सीता तुम यहां के जंगली जानवरों को अयोध्या के निवासियों, चित्रकूट के इस पर्वत को अयोध्या नगरी और मंदाकिनी नदी को सरयू के समान मानो। श्री राम का यह कथन दर्शाता है कि कैसे प्रकृति में बसे स्थल हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक आस्था का केंद्र बन जाते हैं। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने सांस्कृतिक धरोहरों और पर्यावरण स्थलों का सम्मान करना चाहिए क्योंकि यह हमें किसी भी आत्मिक सुख की कमी नहीं होने देते हैं।

10. पर्यावरणीय स्वच्छता और आश्रम का संरक्षण

शरण्यं सर्वभूतानां सुसंमृष्टाजिरं सद द्य
मृगैर्बहुभिराकीर्णं पक्षिसंघैः समातम् द्यद्य ३–१–३

आश्रम के आंगन का निरंतर झाड़—बुहार कर स्वच्छ बनाए रखना पर्यावरणीय स्वच्छता का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि हमारे रहने के स्थान और आसपास का वातावरण स्वच्छ होना चाहिए, ताकि सभी जीव—जंतु वहाँ आराम से रह सकें। स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे बनाए रखना पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी दर्शाता है।

11. प्राकृतिक सुंदरता और जैव विविधता की सुरक्षा

पूजितं चोपनृत्तं च नित्यमप्सरसाम् गणैः द्य
विशालैरग्निशरणैः स्रुग्भाण्डैरजिनैः कुशैः द्यद्य ३—१—४
समिद्भिस्तोयकलशैः फलमूलश्च शोभितम् द्य
आरण्यैः च महा वृक्षैः पुण्यैः स्वादु फलै र्वृतम् द्यद्य ३—१—५

इसमें वृक्षों, पक्षियों, और वन्य जीवन का वर्णन किया गया है। आश्रम का चारों ओर से वृक्षों, पक्षियों, और मृगों से घिरा होना जैव विविधता का संदेश देता है। इन पदों में दर्शाया गया है कि पक्षियों का कलरव, वृक्षों की छाया, और वन्य जीवों का सह—अस्तित्व किस प्रकार वातावरण को रमणीय बनाता है। यह संदेश देता है कि हमें प्रकृति की विविधता को संरक्षित करना चाहिए, क्योंकि यह विविधता ही पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है।

12. वन्यजीवों के साथ शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व

इमम् आश्रमम् आगंय मृग संघा महीयसः द्य
अहत्वा प्रतिगच्छन्ति लोभयित्वा अकुतोभयाः द्यद्य ३—७—१८

आश्रम में मृग, पक्षी, और अन्य वन्यजीव बिना किसी भय के विचरण करते हैं। इससे पता चलता है कि इस आश्रम में सभी जीव—जंतुओं के साथ सम्मानपूर्वक सह—अस्तित्व का भाव है। यह हमें सिखाता है कि मानव को प्राकृतिक आवास में जीव—जंतुओं के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व बनाए रखना चाहिए।

13 .प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और नैतिकता

तृतीयम् यद् इदम् रौद्रम् पर प्राण अभिहिंसनम् ।
निर्वैरम् क्रियते मोहात् तत् च ते समुपस्थितम् ।। ३—६—६

सीता जी श्री राम को याद दिलाती हैं कि बिना शत्रुता के किसी पर आक्रमण करना अनुचित है और यह एक प्रकार का व्यसन है। वे उन्हें अहिंसात्मक जीवन और प्राकृतिक जीवन का महत्व समझाते हुए कहती हैं कि वन में धर्म का पालन करने के लिए हिंसा नहीं होनी चाहिए। यह हमें पर्यावरण और उसमें रहने वाले जीवों के प्रति संवेदनशील और नैतिक दृष्टिकोण अपनाने का संदेश देता है। इस प्रकार की नैतिकता पर्यावरणीय शिक्षा का एक प्रमुख अंग है।

14. प्राकृतिक सौंदर्य और संसाधनों का महत्व

गोदावर्याः समीपे च मैथिली तत्र रंस्यते द्यद्य ३—१३—१८
प्राज्य मूल फलैः चौव नाना द्विज गणैयुतः द्य
विविक्तः च महाबाहो पुण्यो रम्यः तथैव च द्यद्य ३—१३—१६

पंचवटी की प्रशंसा में वर्णित वन, गोदावरी नदी, फल, मूल, और पक्षियों से समृद्ध वातावरण यह दर्शाता है कि प्राचीन समय में प्राकृतिक संसाधनों का आदर और संरक्षण किया जाता था। यह हमें बताता है कि मानव को प्रकृति का उपभोग करने के साथ उसका सम्मान भी करना चाहिए।

15.पर्यावरणीय क्षति का प्रभाव

रुदन्तम् इव वृक्षैः च ग्लान पुष्प मृग द्विजम् द्य
श्रिया विहीनम् विध्वस्तम् संत्यक्त वन दैवतैः द्यद्य ३—६०—६

सीता हरण के बाद उजड़ी हुई कुटिया, मुरझाए फूल, और वन देवताओं का स्थान छोड़ देना यह दर्शाता है कि जब प्रकृति को नुकसान पहुंचता है, तो उसका प्रभाव समग्र वातावरण पर पड़ता है।

16. पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन

तत्र हंसाः प्लवाः क्रौञ्चाः कुरराः चौव राघव ।। ३—७३—१२
वल्गु स्वरा निकूजन्ति पंपा सलिल गोचराः ।
न उद्विजन्ते नरान् दृष्ट्वा वधस्य अकविदाः शुभाः ।। ३—७३—१३

पंचवटी और पंपा सरोवर के वर्णन में जलस्रोतों, वनस्पतियों, और पशु—पक्षियों का पारिस्थितिक संतुलन स्पष्ट होता है। जलस्रोतों का महत्व न केवल पेड़—पौधों के लिए बल्कि जीव—जंतुओं के लिए भी दर्शाया

गया है। इसका संरक्षण और देखभाल करना मानव का कर्तव्य है। श्रीराम द्वारा पंपा सरोवर में उपस्थित पक्षियों का वर्णन यह सिखाता है कि कैसे जल के पास जीव–जन्तु निर्भय होकर रहते हैं। यह मानव समाज को बताता है कि उनका अस्तित्व भी इस संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र में सहायक है।

17. द्वीपों, नदियों और सागरों का जैव भौगोलिक ज्ञान

यत्नवन्तो यव द्वीपम् सप्त राज्य उपशोभितम् द्य
सुवर्ण रूप्यकम् द्वीपम् सुवर्ण आकर मण्डितम् द्यद्य ४–४०–३०

यवद्वीप, सुवर्णद्वीप, रूपक द्वीप, शोण नदी, इक्षुरस से भरे समुद्र, लोहित समुद्र, घृत समुद्र, दधि समुद्र, क्षीर समुद्र जैसे जल निकायों का वर्णन दर्शाता है कि उस काल के व्यक्ति प्राकृतिक जल स्रोतों के प्रकार, स्वरूप और प्रवृत्ति की समझ रखते थे, जो सिखाता है कि हमें जल संसाधनों की विविधता को पहचानना और उसका आदर करना आना चाहिए। जल के विभिन्न रूप जैसे स्वाद, रंग, प्रवाह का वर्णन जल संरक्षण की समझ को विकसित करता है।

18.नगर नियोजन में प्राकृतिक सौंदर्य और सजीवता की अवधारणा

पप्रप्राकारजघनां विपुलाम्बुनवाम्बराम् द्य
शतघ्नीशूलकेशान्तामट्टालकवतंसकाम् द्यद्य ५–२–२१
मन्सेव कृतां लङ्कां निर्मितां विश्वकर्मणा द्य

लंका के भौतिक रूप को एक स्त्री के रूप में देखना, वन और समुद्र को वस्त्र रूप में देखना, यह प्रकृति को मानवीय सौंदर्य से जोड़ने की कला है। इसे स्पष्ट होता है कि उस समय की शिल्प कला और वास्तु विन्यास में भी पर्यावरण की सौंदर्यात्मक भूमिका प्रमुख थी। शतघ्नी और शूल जैसे अस्त्रों को केश के रूप में दर्शाने से एक पर्यावरणीय चेतावनी भी निहित है।

19. जीवो के प्रति करुणा और मानव प्रकृति संबंध

स तम् निपतितम् भूमौ शरण्यः शरणा गतम् द्यद्य ५–३८–३४
वध अर्हम् अपि काकुत्स्थ कृपया पर्यपालयः द्य

श्री राम का कौवे के प्रति दया भाव स्पष्ट करता है कि प्राकृतिक न्याय केवल दंड नहीं बल्कि करुणा से भी चलता है। सीता जी द्वारा दया को सबसे बड़ा धर्म बताना मानव का पर्यावरण के साथ दयालु व्यवहार को दर्शाता है। यह प्रसंग दर्शाता है कि हिंसा के उत्तर में भी यदि पशु पक्षी क्षमा मांगे तो उन्हें जीवन दान देना चाहिए। यह पर्यावरणीय नैतिकता का गूढ संदेश है।

20. ऋतु और पर्यावरण चक्र

पुष्पवर्षाणि मुञ्चन्तो नागरू पवनतादितारू।
रौलं तं वसंतिव मधुमाधवगन्धिनरू ।। ७.२६.१०

बसंत ऋतु में वृक्षों द्वारा फूलों की वर्षा तथा वातावरण में सुगंध का फैलाव इस तरफ संकेत करता है कि ऋतुओं का क्रम पर्यावरण चक्र, पुष्पन, फलन आदि प्रक्रियाएं प्रकृति के संतुलन को बनाए रखती हैं। यह दर्शाता है कि पर्यावरण शिक्षा में ऋतुओं की समझ और उनके अनुरूप आचरण आवश्यक है।

निष्कर्ष

वाल्मीकि रामायण के इन पदों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रकृति केवल हमारे लिए संसाधनों का स्रोत नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का आधार है। इन पदों में प्रकृति के प्रति आदर, पर्यावरणीय संतुलन, जैव विविधता की सुरक्षा, स्वच्छता, और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का जो संदेश दिया गया है, वह आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक है। हमें इन शिक्षाओं का पालन कर पर्यावरण के साथ संतुलित और स्थायी जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

रामायण में प्राकृतिक संपदा के प्रति जो सम्मान का भाव प्रस्तुत किया गया है, वह आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। यह शिक्षण न केवल पर्यावरण के संरक्षण पर जोर देता है बल्कि मनुष्य को प्राकृतिक परिवेश में रहने और उसकी कद्र करने की प्रेरणा भी देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- श्री वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस, गोरखपुर संवत 2057।
- यादव,के.एल. (2017) वाल्मीकि रामायण का पर्यावरणीय दृष्टि से मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, पृ संख्या 1087–1090
- सिंह, भो. (2012) पर्यावरण अध्ययन। मोनिका पब्लिकेशन,जयपुर

- प्रभा माधुनी (2018) वाल्मीकि रामायण में पर्यावरण और सामाजिक व्यवस्था का मार्गदर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ संस्कृत रिसर्च अनंता,4(4) 92–93
- जोशी मयूरेश (2022) प्राचीन भारतीय शास्त्रों में पर्यावरणवाद–एक संक्षिप्त समीक्षा। पृथिव्या,2(2),34–37
- *डॉ मृदुला शर्मा* (2025) भारतीय ज्ञान परंपरा मे निहित पर्यावरण चेतना का शैक्षिक विश्लेषणः वाल्मीकि रामायण के विशेष संदर्भ मे, अप्रकाशित शोध पत्र

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY